कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

अहिंसा के सच्चे बादशाह: ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान

स्थान: *उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत, पाकिस्तान*

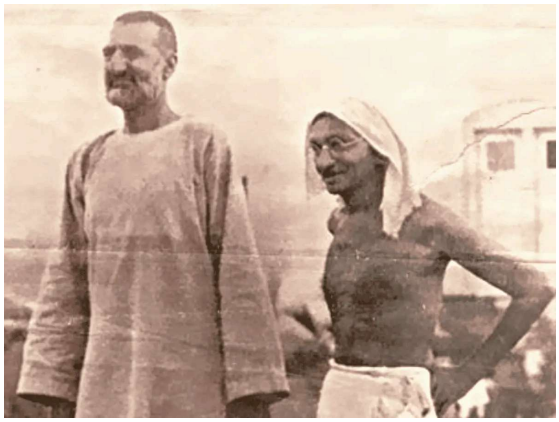

बहुत साल पहले, आज के पाकिस्तान में, एक ऐसे पठान योद्धा का जन्म हुआ, जो तलवार से नहीं, बल्कि शांति और प्रेम से लड़ना चाहता था। उनका नाम था — खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान। लोग उन्हें प्यार से ***सरहदी गांधी*** कहते थे।

पठान समाज के बारे में आम धारणा थी कि वे गुस्सैल और झगड़ालू होते हैं। लेकिन खान साहब ने अपने लोगों से कहा — ***"असली हिम्मत तलवार उठाने में नहीं, बल्कि गुस्से को शांत रखने में है।"***

उन्होंने अपना पूरा जीवन अहिंसा और सेवा के मार्ग को समर्पित किया। उन्होंने **'खुदाई खिदमतगार'** नाम का संगठन बनाया — जिसका अर्थ है ***ईश्वर के सेवक***। इस संगठन के कार्यकर्ता हथियार नहीं उठाते थे, बल्कि लाल कुर्ता पहनकर सेवा, सत्य और भाईचारे का संदेश फैलाते थे। इस संगठन में हज़ारों पठान जुड़े — और खास बात यह थी कि **इसमें छोटे बच्चे भी शामिल थे!**

ये बच्चे बिलकुल नहीं डरते थे। वे गाँव-गाँव घूमकर अंग्रेज़ अधिकारियों की गतिविधियों पर नज़र रखते, लोगों को जागरूक करते, और सत्याग्रह के माध्यम से अंग्रेज़ों को परेशान करते — वह भी बिना किसी हिंसा के! **ये बच्चे न तो जेल जाने से डरते, न ही पुलिस की मार से।** एक बार तो एक अंग्रेज़ अधिकारी ने कहा — ***"इन बच्चों जितने बहादुर हमने किसी को नहीं देखा!"***

अंग्रेज़ हैरान रह गए — इतने वीर लोग, पर हाथ में हथियार नहीं! लेकिन खान साहब अडिग रहे — ***"हमें बदला नहीं, हमें बदलाव चाहिए।"***

उनकी इस सोच ने पठानों की छवि बदल दी। दुनिया को दिखा दिया कि असली वीरता की कसौटी है — दूसरों को माफ करना और देश के लिए शांति के रास्ते पर संघर्ष करना।

सबक: खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान हमें सिखाते हैं — अगर दिल बड़ा हो, तो हिंसा की कभी ज़रूरत नहीं पड़ती।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

अल्लाह बख्श सुमरू

स्थान: *सिंध*

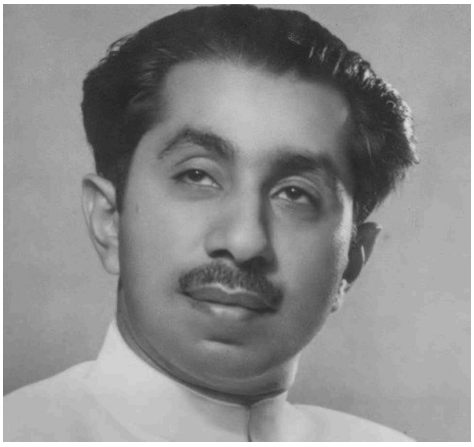

वह समय बहुत कठिन था। भारत पर अंग्रेज़ों का राज था। हर कोना स्वतंत्रता के लिए तड़प रहा था। कहीं प्रदर्शन हो रहे थे, कहीं नारे लग रहे थे। लेकिन इस संघर्ष में एक और ख़तरे की छाया फैल रही थी — कुछ लोग धर्म के नाम पर भारत के टुकड़े करने की बात कर रहे थे।

ऐसे समय में, एक निडर नेता आगे आए — अल्लाह बख्श सुमरू। 1890 में सिंध प्रांत के एक साधारण परिवार में उनका जन्म हुआ। न वे किसी राजघराने से थे, न बड़े ज़मींदार। लेकिन उनके दिल में देश के लिए गहरा प्रेम और न्याय के लिए लड़ने का अदम्य साहस था। कम उम्र में ही उन्होंने राजनीति में कदम रखा। ईमानदारी और मेहनत के बल पर वे सिंध प्रांत के प्रधानमंत्री बने। लेकिन सत्ता ने उन्हें घमंडी नहीं बनाया। वे हमेशा लोगों में घुलमिलकर उनका दुख-सुख सुनते और कहते, **"मैं नेता नहीं, मैं जनसेवक हूं!"**

जब देश को आज़ादी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब कुछ लोगों ने हिंदू–मुसलमानों के बीच दीवारें खड़ी करने की कोशिश की। लेकिन अल्लाह बख्श चुप नहीं बैठे। उन्होंने **'आजाद पार्टी'** की स्थापना की और साफ़ कहा — **"भारत एक है, उसका बंटवारा कोई नहीं कर सकता! हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई — सभी इस मिट्टी के बेटे हैं।"**

ब्रिटिश शासन के विरोध में उन्होंने **अंग्रेज़ों द्वारा दी गई सभी उपाधियां और पुरस्कार लौटा दिए।** वे 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए। गांधीजी की तरह उनका भी अहिंसा और एकता पर गहरा विश्वास था। उनका सपना था — एक स्वतंत्र और अखंड भारत।

भारत के विभाजन के विरोध में उन्होंने मुसलमानों के कई जुलूसों का नेतृत्व किया। उनकी आंदोलन में लाखों हिंदू–मुस्लिम एक साथ आए। यह बात उन लोगों को नागवार गुज़री जो भारत का बंटवारा चाहते थे।

14 मई 1943 को, एक कार्यक्रम में जाते समय, दो हथियारबंद व्यक्तियों ने उन पर गोली चलाई... और देश ने अपना एक सच्चा बेटा खो दिया।

सीख: अल्लाह बख्श सुमरू ने दिखा दिया कि सच्ची देशभक्ति धर्म, जाति और भाषा से ऊपर होती है। दिल में साहस और नीयत साफ़ हो, तो कोई ताकत हमें तोड़ नहीं सकती। उनकी कहानी आज भी कहती है — **"डरो मत, सच बोलो! आपस में मत लड़ो, एक साथ चलो!"**

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

जादूगर शोभाराम की कहानी

स्थान: *अजमेर, राजस्थान*

अजमेर के एक छोटे से गाँव में एक साधा, सीधा लड़का रहता था — शोभाराम गेहरवार। वह दलित समाज से था। देखने में साधारण, लेकिन उसके दिल में आज़ादी की प्रचंड ज्वाला जल रही थी।

सिर्फ़ 14–15 साल की उम्र में ही वह स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ा। उसके पास न हथियार थे, न बड़ी शिक्षा, लेकिन उसके पास एक अनोखी ताकत थी — **किसी भी रूप में घुल-मिल जाने की कला!** कभी किसान, कभी मज़दूर, तो कभी संत का वेश बदलकर वह अंग्रेज़ पुलिस की नज़रों से बच निकलता।

एक बार तो चंद्रशेखर आज़ाद ने ख़ुद उसे जंगल में बम बनाने की जगह पर ले जाया। पुलिस आस-पास होते हुए भी शोभाराम चुपचाप उनके हाथ से फिसल निकल जाता — जैसे कोई जादूगर! इसलिए लोग उसे कहते — **“अजमेर का जादूगर!”**

उसके जीवन में एक मज़ेदार लेकिन ख़तरनाक घटना भी हुई। उसके साथियों ने नदी किनारे गनपाउडर का धमाका किया और संयोग से उसी समय एक बाघ पानी पीने आया। धमाके की आवाज़ से बाघ भाग गया... लेकिन पुलिस दस्ते में हड़कंप मच गया! इस अफ़रा-तफ़री में शोभाराम और उसके साथी सुरक्षित भाग निकले।

शोभाराम मानव डाकिये की तरह भी काम करता था। ब्रिटिश सरकार चिट्ठियों की जांच करती थी, जिससे भूमिगत क्रांतिकारियों से संपर्क करना मुश्किल हो गया था। लेकिन वह साहस के साथ संदेश पहुँचाता — कई बार अपनी जान जोखिम में डालकर। एक बार तो पुलिस ने उसके पैर में गोली मार दी, फिर भी वह भागने में सफल रहा!

आज़ादी के बाद शोभाराम ने कभी कोई पद, पुरस्कार या शोहरत की मांग नहीं की। वह हमेशा कहता — **“मैंने नाम के लिए नहीं, देश के लिए काम किया है।”** शोभाराम जैसे बहादुर, चतुर और निःस्वार्थ देशभक्तों की वजह से ही हम आज़ाद हैं। उन्हें सत्ता की लालसा नहीं थी — बस देश के लिए जीने की लगन थी।

सीख: आप युवा हों या वृद्ध — अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना ज़रूरी है। असली ताकत बड़ी कुर्सी में नहीं, बल्कि बड़े दिल, साहस और अटल संकल्प में होती है।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

हौसा पाटिल: जंगलों की बहादुर दीदी

स्थान: *सातारा, महाराष्ट्र*

क्या आपने कभी कल्पना की है कि कोई बिना बंदूक, बिना सेना और बिना डरे अंग्रेज़ों से लड़ सकता है?

हौसा पाटील ऐसी ही एक वीरांगना थीं — जो दिन में खेत जोततीं और रात में जंगल में जाकर आज़ादी के लिए लड़तीं! महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव से निकलकर उन्होंने ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी — और वह भी बिना रुके, बिना डरे।

उस समय अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए **'प्रति सरकार'** नाम का एक गुप्त स्वराज्य खड़ा किया गया था — यानी जनता का अपना सरकार! हौसा दीदी इस सरकार के लिए सब कुछ करती थीं — रात के अंधेरे में संदेश पहुँचाना, घायल साथियों को दवाइयाँ देना, अंग्रेज़ों से छिपाकर अन्न व कपड़े लाना... वह कहती थीं, **"गाँव की मिट्टी ने हमें खिलाया है, अब उस मिट्टी के लिए कुछ लौटाने का समय आ गया है!"**

हौसा दीदी की असली ताक़त थी उनकी हिम्मत और चतुराई। एक बार अंग्रेज़ सैनिक उन्हें पकड़ने गाँव में आ पहुँचे, लेकिन गाँव की महिलाओं ने उन्हें अलग-अलग जगहों पर छिपा दिया — कभी धान के खेतों में, कभी कुएँ के पास, तो कभी जंगल की पगडंडियों पर।

उनका सबसे रोमांचक अनुभव था कृष्णा नदी पार करना। वह काली रात थी, पानी उफान पर था, पुल कहीं नहीं था। लेकिन हौसा दीदी नहीं डरीं। वह और उनके साथी कभी लकड़ी के पटरे पर, तो कभी बैलगाड़ी के टूटे पहिये पर बैठकर नदी पार कर गए। पानी का बहाव तेज़ था, पानी बर्फ जैसा ठंडा — लेकिन उनके दिल में जल रही आज़ादी की ज्वाला और भी तेज़ थी!

स्वतंत्रता के इतिहास में हम कई बड़े नाम सुनते हैं, लेकिन हौसा पाटील जैसी साधारण, फिर भी असाधारण महिलाओं को हम भूल नहीं सकते। वह अक्सर कहती थीं — **"हमने कुछ बड़ा नहीं किया, हमने बस ज़रूरी काम किया।"**

शिक्षा: हौसा पाटील कोई रानी नहीं थीं, न उनके पास तलवार थी, न सेना। लेकिन फिर भी वह सच्ची योद्धा थीं। छोटे-से छोटे काम भी यदि दिल से किए जाएँ, तो देश को आज़ाद कराने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं — यह उन्होंने साबित किया। आज हम स्कूल जा सकते हैं, अपने विचार खुलकर रख सकते हैं — क्योंकि हौसा दीदी और उनके जैसे हज़ारों नायकों ने वह आज़ादी हमारे लिए जीती। हमें भी उनकी तरह निर्भीक, निडर और सच्चे देशभक्त बनना चाहिए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

उषा मेहता: सबसे शांत, लेकिन सबसे बड़ी आवाज़

स्थान: *सूरत, गुजरात*

साल था 1920। जगह – गुजरात के सूरत शहर में एक प्यारी-सी बच्ची का जन्म हुआ। उसका नाम था उषा मेहता। जहाँ बाकी बच्चे आँगन में खेलते, वहीं उषा के दिल में देशभक्ति की प्रखर लौ जल रही थी।

एक बार, जब वह सिर्फ़ 8 साल की थीं, उन्होंने गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने पूरे जोश से नारे लगाए – **"ब्रिटिश भारत छोड़ो!"**

1942 में गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। ब्रिटिश सरकार घबरा गई और गांधीजी, नेहरूजी समेत सभी बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया गया। अब एक बड़ा सवाल था – गांधीजी का संदेश और सच्ची ख़बरें लोगों तक कैसे पहुँचें?

इसी समय उषा दीदी ने एक साहसी योजना बनाई। उन्होंने कुछ भरोसेमंद साथियों के साथ मिलकर **एक गुप्त रेडियो स्टेशन शुरू किया** – "कांग्रेस रेडियो"। यह एक गुप्त कमरे से चलता था, और रोज़ाना उषा दीदी लोगों तक पहुँचाती थीं – आंदोलन की असली ख़बरें, गांधीजी और नेताओं के भाषण, और आगे की कार्ययोजना।

ब्रिटिश पुलिस को इसकी भनक लगी। तलाश शुरू हुई। कई बार उषा दीदी और उनके साथी रेडियो लेकर इधर-उधर भागे, छिपे, लेकिन हार नहीं मानी। आखिर 12 अगस्त 1942 को अंग्रेज़ों ने उन्हें पकड़ लिया। **उनकी सख़्त पूछताछ हुई, धमकियाँ दी गई – लेकिन उषा दीदी चट्टान-सी अडिग रहीं।** उन्होंने किसी भी साथी का नाम नहीं बताया।

उन्हें जेल हुई, लेकिन उनके मन में बस एक सपना था – **"मेरा भारत स्वतंत्र हो!"**

स्वतंत्रता के बाद, उषा मेहता ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और समाजसेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मविभूषण' समेत कई सम्मान प्रदान किए।

सीख: देश की सेवा करने के लिए उम्र की कोई बाधा नहीं, बस साहस चाहिए। एक लड़की भी अपनी आवाज़ से इतिहास बना सकती है। सत्य और साहस से बड़ी कोई ताकत नहीं।